

संपादकीय

भारत के लिए बड़ा मौका

ए पल का ल्लान कि अमेरिका में बिकने वाला हर आइफोन भारत में बना हो, मेक इन ईंटिया के लिए एक बड़ा मौका है, लेकिन ग्लोबल सलाह चेन में चीन की जगह लेने के लिए भारत को बहुत कुछ करना होगा, जिसका मौका डॉनल्ड ट्रंप के टैरिफ वार की वजह से उसे मिला है। भारत में आइफोन की कहानी बड़ी कारोबारी सफलताओं में से एक रही है। इस साल अभी तक भारत ने एप्ल के लिए 25-30% आइफोन बनाये हैं, जबकि पिछले साल वह अंकड़ा 18% था। यह तरकीबी बढ़िया खबर है, लेकिन एक सच यह भी है कि भारत में जितना प्रॉडक्शन हो पाता है, अमेरिका में आइफोन का बार उत्तर से कहीं बड़ा है। जबकि इस साल मार्च में भारत से 31 लाख यूनिट वहाँ भेजी गयी थीं वहाँ एप्ल के चीफ टिम कुक की घोषणा के लिए बड़ा होगा, जिसका बार एप्ल के चीफ टिम की मांग को पूरा करना है, तो मैन्यूफैक्रिंग कैपेसिटी को बढ़ाना होगा। अच्छी बात यह है कि तमिलनाडु के होसुर और बंगलुरु में दो नवी फैसिलिटी तैयार हैं और इनके जल्द शुरू होने की उम्मीद है। भारत के पास कुछ साल पहले भी एसा मौका आया था - कोरोना, 2018 के ट्रॉप के चीन के साथ ट्रॉप वार और दक्षिण चीन सागर में उभरते तावाक के मद्देनजर जब दुनिया चीन एप्स वन ऑपरेशन की तलाश कर रही थी। उस समय विवराम जैसे देशों ने बाजी ली थी।

आइफोन की सफलता वैश्विक स्तर पर भारत की हैसियत बढ़ायी और तब इन अंकड़ों को भी बढ़ा जा सकेगा। इस वर्ष अमेरिका के साथ ट्रॉप जैल पर भी बात चल रही है। इसके अंतम पर पहुंचने से नवी दिल्ली के पास अमेरिकी कंपनियों को लुभाने का एक और कारण होगा।

उसे कम कॉरपोरेट टैक्स रेट, निवेश में असानी और सर्वत्र श्रम का काफ़ाया मिला। मौजूदा टैरिफ वार से भारत को जो मौका मिला है, उसे हाथ से नहीं निकलने देना चाहिए। खास कर वह देखें हूए कि दुनिया का कारोबारी माहौल उसके पक्ष में है। कोरोना के वक्त से अमेरिकी कंपनियों पर चीन से बाहर निकलने का जो दबाव था, वह हाल में ट्रॉप के टैरिफ वार से और बढ़ गया है। ट्रॉप प्रशासन ने चीन पर 245%, जबकि भारत पर 26% का आयात शुल्क लगाया है, और इसे बी फिलहाल 90 दिनों के लिए टाल रखा है। एप्ल की भारत में दिलचस्पी की बढ़ी जाहिर सही है। फिर पीएलआई जैसी सरकारी योजनाओं ने भारत में उत्पादन को ससान बना दिया है। इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्यूफैक्चरिंग में भारत की हिस्सेदारी 8.4% है और चीन की 76.6%। आइफोन की सफलता वैश्विक स्तर पर भारत की हैसियत बढ़ायी और तब इन अंकड़ों को भी बढ़ा जा सकेगा। इस वक्त अमेरिका के साथ ट्रॉप जैल पर भी बात चल रही है। इसके अंतम पर पहुंचने से नवी दिल्ली के पास अमेरिकी कंपनियों को लुभाने का एक और कारण होगा।

अभिमत आजाद सिपाही

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अगर स्वयं यह वक्तव्य दे युक्त है कि अब दुमन को निर्मि ने निलाने का समय आ गया है, तो उन्होंने केवल आग लोगों को खुश करने के लिए नहीं बोला होगा। सारे प्रमुख निर्मितीय संस्थानों, सुरक्षा, राजनीतिक और अर्थात् मानवों को लेकर बैठक हो चुकी है। विदेश मंत्री लगातार विदेशी नेताओं से बात कर रहे हैं और नवी दिल्ली दियत प्रमुख दूतावास के लोगों से संवाद हो रहा है। सैन्य प्रमुखों से नुकात के बाद यही बयान आया कि सरकार ने ऐसा को पूरी स्वतंत्रता दी है कि वह अपने अनुसार सूचनाओं के आधार पर जैसे चाहे कार्रवाई करें उसे सरकार का हर तरह का समर्पण प्राप्त होगा। ऐसी स्थिति में हमें यहाँ सुन्धार देता है यह मायने नहीं रखता। हमें अपनी सुधा करनी है और इसके लिए कोई तात्काल हमको नहीं रोक सकती।

अवधेश कुमार

इस समय विषय का बयान है कि वह जम्मू-कश्मीर और पहलगाम मामले पर सरकार के साथ है। इससे पहली हाईट में आतंकवाद के विरुद्ध देश की एकता का संदेश जाता है। दूसरी ओर कांग्रेस अध्यक्ष मलिकाजुन खड़े यह रहे हैं कि सरकार की दिशा स्थगित हो जाए। यह दुर्भाग्यवूर्ण और अत्यंत चिंताजनक है कि ऐसे समय जब राजनीतिक दलों में एकता दिखनी चाहिए, अरोप-प्रत्यारोप और छंटाकशी का तीखा दौर चल रहा है। आतंकवादी हमले के मामले में स्वयं कांग्रेस का रिकार्ड इतना बुरा है कि अगर उस दृष्टि से देखें तो फिर उसके द्वारा प्रश्न उठाने वाले ने नरेंद्र मोदी सरकार को कठोर खड़ा करने का नैतिक आधार नहीं होना चाहिए। हालांकि विषय के द्वारा सरकार पर दबाव बढ़ाना या कमियों को सामने लाना स्वाभाविक स्थिति होती है।

हमारा दृश्य इससे अलग है। दबाव डालने और प्रश्न उठाने के पैचे स्पष्ट इरादा दुमन के विरुद्ध निर्णयिक प्रतिकार का होना चाहिए। ध्यान से देखें तो प्रश्न उठाने का सरकार पर प्रश्न उठाने का एक अपर्याप्त विवराम है। ध्यान से सरकार के साथ है, पर आपको

चीन

और उर्कुं को छोड़ दें तो भी अपने संघर्षों में उत्तर एवं उत्तर पर आपका चाहिए।

उत्तर हुए आपका पांचिंग

सरकार के साथ है, पर आपको

इनमें पाकिस्तान का नाम नहीं मिलता। दूसरे, इस समय धीरे-धीरे जिस तरह स्वयं जम्मू-कश्मीर के अंदर आतंकवादियों और पाकिस्तान के समर्थकों जिन्हें ओवरग्राउंड रखा है।

कहा जा रहा है, की

असलियत सामने आ रही है उन पर भी विषयीकृत दल मुंह खोलने को तैयार नहीं है। कोई भी आतंकवादी हमला कर देखें तो प्रश्न उठानी वाली ही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अगर स्वयं वह वक्तव्य दे चुके हैं कि अब दुमन को



सेना की विधायिका इस्लाम जगह की ऐसी व्याख्या पर आधारित है, जिसने उनके लिए प्रक्रियान्वयन देश का लक्ष्य ही जम्मू-कश्मीर को इस्लामी राज्य में परिणत कर अपने साथ निलाना है। हम आतंकवादी को नामों पर आइडिया और अपने अनुसार फिर हमला कर सकता है। इसने दुनिया में कौन हमें यहाँ सुझाव देता है यह मायने नहीं रखता। हमें अपनी सुधा करनी है और इसके लिए कोई तात्काल हमको नहीं रोक सकती।

मिली में मिलाने का समय आ गया है, तो उन्होंने केवल आग लोगों को खुश करने के लिए नहीं बोला होगा। सारे प्रमुख मत्रिमंडलीय समितियों, सुरक्षा, राजनीतिक और अर्थात् मामलों को लेकर बैठके हो चुकी हैं।

विदेश मंत्री लगातार विदेशी नेताओं से बात कर रही है कि वह भारत पर अपने अपेक्षाएँ अपने अपेक्षाएँ के लिए उत्तर देना चाहिए। जिसने उनके लिए उत्तर देने के लिए उत्तर देना चाहिए।

कहा जा रहा है कि आपको

इनमें पाकिस्तान का नाम नहीं मिलता।

दूसरे, इस समय धीरे-धीरे जिस तरह स्वयं जम्मू-कश्मीर के अंदर आतंकवादियों और पाकिस्तान के समर्थकों जिन्हें ओवरग्राउंड रखा है।

जब एक ही आतंकवादी दस्ता प्रदेश के विभिन्न भागों में लगातार सुरक्षा बलों और लोगों पर हमले भी कर रहा है और बच कर निकल रहा है। आतंकवादियों ने पहलगाम के आसपास किसी विशेष जगह पर हाथियां चुपचापे थे। अभी तक की जानकारी के अनुसार इन्होंने अपने अपेक्षाएँ के लिए उत्तर देना चाहिए।

आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष में अलग पहलुओं पर काम कर रही है।

जिसने उनके लिए प्रक्रियान्वयन देश का लक्ष्य ही जम्मू-कश्मीर को इस्लामी राज्य में परिणत कर अपने साथ मिलाना है। हम आतंकवादी को नामों पर आइडिया और अपने अनुसार फिर हमला कर सकता है। सेना और दूसरे हमले देश का लक्ष्य ही जम्मू-कश्मीर को इस्लामी राज्य में परिणत कर अपने साथ मिलाना है। हम आतंकवादी को नामों पर आइडिया और अपने दूसरे हमले के लिए दूसरे समूह तैयार कर रहे हैं। इसमें दुनिया में कौन हमें यक्का सुझाव देता है यह मायने नहीं रखता। हमें अपनी सुधा करनी है और इसके लिए कोई ताकत हमको नहीं रोक सकती।

चीन और उर्कुं को छोड़ अन्य देशों से भी अपने संघर्षों का लाभ उठाते हुए भारत पर धेरेवंदी की कोशिश कर रहा है। सबके अंतिम कदम के रूप में भारत ने पाकिस्तान के साथ दृष्टिकोण से भारत के लिए उत्तर देश के लिए आतंकवादी की जानकारी तक आधारित कर रखा है। इसके लिए दुनिया में कौन हमें यक्का सुझाव देता है यह मायने नहीं रखता। हमें अपनी सुधा करनी है और इसके लिए कोई ताकत हमको नहीं रोक सकती।

अलग पहलुओं पर काम कर रही है।

जिसने उनके लिए उत्तर देश का लक्ष्य ही जम्मू-कश्मीर की विभिन्न भागों में लगातार सुरक्षा बलों और लोगों पर हमले कर रहे हैं। उनको जिंदा पकड़ने की कोशिश कर रही है। आतंकवादियों को हर हाल में जिंदा पकड़ने की कोशिश चल रही है। अभी तक की जानकारी के अनुसार इन्होंने अपने अपेक्षाएँ के लिए 25 से 30 किलोमीटर के लिए उत्तर देश के लिए आतंकवादी को नामों पर आइडिया और अपने अनुसार फिर हमला कर सकता है। सेना और दूसरे हमले देश का लक्ष्य ही जम्मू-कश्मीर को इस्लामी राज्य में परिणत कर अपने साथ मिलाना है। हम आतंकवादी को नामों पर आइडिया और अपने दूसरे हमले के लिए जानवार इन्होंने अपने अपेक्षाएँ के लिए उत्तर द

